जैसा कर्म होगा वैसे ही शरीर का निर्माण होगा

बीदासर, 21 मार्च।

आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में उपस्थित जनसमुदाय को 'प्रदेशी राजा व केशी स्वामी' की कथा का वाचन करते हुए कहा ''जब केशी स्वामी ने कहा कि प्रदेशी तुम कल्पना करो कि एक व्यक्ति अंधेरे कमरे में जाता है जिस कमरे में कोई छिद्र नहीं होता, सिर्फ भीतर जाने का एक दरवाजा होता है उसमें एक आदमी जाकर दीपक जलाता, दरवाजा बंद कर देता है तो प्रदेशी बताओ कि प्रकाश कहां फैलेगा? प्रदेशी बोला - महाराज! - भीतर फेलेगा, बाहर नहीं फेलेगा, पूरे कक्ष में प्रकाश फैल जाएगा।'' केशी स्वामी ने प्रदेशी राजा से कहा कि कोई व्यक्ति आकर उस दिये पर एक ढक्कन डाल देता है तो प्रकाश कहां जाएगा। 'प्रदेशी राजा बोला - प्रकाश उस ढक्कन के भीतर फैलेगा।''

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहानी के माध्यम से सभा को संबोधित करते हुए कहा कि इसी प्रकार जीव छोटे शरीर का निर्माण करता है तो उसके आत्मप्रदेशों का विस्तार छोटे में हो जाता है और बड़े :ारीर का निर्माण करता है तो बड़े में हो जाता है। जीव में फर्क नहीं है, जीव के असंख्य प्रदेश हैं उनमें संकोच और विस्तार करने की क्षमता है। पांच अस्तिकायों में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तीकाय इन तीन में संकोच और विस्तार नहीं हो सकता है वे जहां है वहीं रहते हैं। जीव में एक क्षमता है कि वह अपने आत्मप्रदेशों का संकोच भी कर सकता है और विस्तार भी कर सकता है। जिस प्रकार का कर्म होता है वैसे ही शरीर का निर्माण होता है।

''एक विशाल मछली जैसा जीव है उस जीव को मरने के बाद एक अंगुली जितने में पैदा होना है, उसकी प्रक्रिया है जब छोटे शरीर में जाना है तो मरने से पहले ही वह अपने प्रदेशों को सिकोड़ना शुरू कर देगा और वे प्रदेश सिकुड़ते-सिकुड़ते छोटे में समा जाते हैं।''

कहानी में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि प्रदेशी राजा को यह मानना पड़ा कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है। तर्क के द्वारा जिज्ञासु राजा ने ज्ञान प्राप्त किया किंतु उसका एक प्रश्न यह रहता है कि मैं नास्तिक हूं, आस्तिक नहीं बन सकता क्योंकि मेरे दादा, पिता सब नास्तिक थे जो कुल परंपरा से चला आ रहा है, उसको छोड़ना कठिन है। महाराज - आप ही बताएं एक मकान में आदमी दस वर्ष रह जाता है उस मकान को छोड़ना भी मुश्किल होता है, एक कपड़ा पहनता है और थोड़ा पुराना हो जाता है तो उसे भी छोड़ना मुश्किल होता है तो महाराज इस मत के साथ मेरा स्नेह हो गया मैं इसे छोड़ नहीं सकता। केशी स्वामी के इतना समझाने पर भी वे आवेश में नहीं गये किंतु इसके प्रत्युतर में केशी स्वामी ने कहा कि तुम इस मत को नहीं छोड़ोगे तो लोभवाणी की तरह पछताओगे।''

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि किसी भव्य प्राणी के मन में संसार परित्याग कर दीक्षित होने की भावना उत्पन्न होती है, वह साधु बन जाता है साधु बनने के बाद उसका उद्दे-य है कर्मों को काटना आत्मा को निर्मल बनाना है।

इस अवसर पर श्रीमती चम्पादेवी बाफना के स्वर्गवास होने पर गंगाशहर से उनके पारिवारिकजन आचार्यप्रवर युवाचार्यप्रवर से सम्बल प्राप्त करने उपस्थित हुए। चम्पादेवी बाफना की सेवाभावना एवं धर्मसंघ के प्रति अगाढ़ श्रद्धा का मूल्यांकन करते हुए आचार्यश्री ने स्वर्गीय चम्पादेवी बाफना को ''श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'' संबोधन से संबोधित किया। उल्लेखनीय है कि स्वर्गीय चम्पादेवी बाफना मुनि जयंतकुमारजी एवं समण मुदितप्रज्ञजी की संसारपक्षीय नानीजी थी।

- अशोक सियोल

99829 03770